Date – 23-07-2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – I (Hons.)

Topic – Possibility of synthetic Judgement : Kant

Scanned with CamScanner

कांट (Immanuel Kant)

जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक इमान्युएल कान्ट का जन्म 22 अप्रैल सन् 1724 ई० को प्रशिया के कोनिंग्सबर्ग (Konigsberg) नगर में हुआ था; इनके पिता स्काट जाति के थे और मोची का काम करते थे। कांट की प्रारम्भिक शिक्षा बहुत कठिनाई पूर्ण थी; 1740 में कोनिंग्सबर्ग के विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और वहाँ से उन्होंने 1749 तक गणित, तर्कशास्त्र तथा भौतिक विज्ञान का अध्ययन किया। 1755 में, उन्होंने अनुसंधान कार्य पर डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की। उनका शोध कार्य 'अग्नि' विषय पर था।

कांट के जीवन-वृत्त से पता चलता है कि वे सरल तथा संकुचित प्रकृति के थे किन्तु फिर भी जिसके मस्तिष्क में आधुनिक विचार दर्शन की अत्यधिक परिवर्तनकारी क्रान्ति छिपी हुई थी अथवा जन्म ले रही थी। कांट का जीवन बड़ा ही नियमित था। अपनी जीवन के सत्तर वर्ष की अवस्था में उसने "संकल्प के बल से मन की शक्ति द्वारा रुग्णावस्था की भावना पर विजय पाना" विषय पर एक लेख लिखा। कांट को कुछ दार्शनिकों के क्रान्तिकारी विचार ही प्रभावित कर सके और कान्ट ने तो आगे आने वाली पीढ़ी को इतना प्रभावित किया कि कोई भी दार्शनिक कांट की उपेक्षा नहीं कर सका। इसलिए डुरेन्ट ने कहा कि दार्शनिक होने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सबसे पहले कांटवादी होना होगा। रूसो ने ही कांट को क्रान्तिकारी निद्रा से जगाया था। कांट ने स्वतः यह बात कही थी। कांट ने बुद्धिवाद और अनुभववाद की कमियों को देखते हुए, इनकी आलोचना की तथा इन दोनों में समन्वय करना इनकी एक समस्या थी, जिसका समाधान उन्होंने हुआ। इस प्रकार इनके सिद्धान्त का नाम आलोचनावाद हुआ।

रचनाएँ - कान्ट की सर्व प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित हैं- (1) क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन (1781), (2) क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीजन (1788) (3) क्रिटिक ऑफ जजमेन्ट (1790).

Scanned with CamScanner

संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों की संभावना
(Possibility of Synthetic Apriori Judgements)

कांट के दर्शन की गुरुत्व समस्या संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों की संभावना की विवेचना करती है। कांट के अनुसार संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय संभव है। उनके अनुसार हमारे कुछ निर्णय संश्लेषणात्मक और प्रागनुभविक दोनों हैं, क्योंकि अनुभव द्वारा प्राप्त संवेदनों को बुद्धि अपनी प्रागनुभविक कोटियों के द्वारा व्यवस्थित करके उनकी रचना करती है। उनकी संश्लेषिकता अनुभव की और प्रागनुभविकता बुद्धि की देन है। कांट को इस बात के प्रतिपादन की प्रेरणा इस बात से मिली थी कि गणित और भौतिकी के वाक्य ज्ञानवर्द्धक और अनिवार्य दोनों होते हैं।

कांट ने अपने ज्ञान को 'संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों की संहिता' के रूप में परिभाषित किया है। ऐसा ज्ञान बुद्धि और अनुभव की सामंजस्यित प्रक्रिया से निर्मित होता है। इसलिए कांट के अनुसार बुद्धिवाद और अनुभववाद में आंशिक सत्यता है। बुद्धिवाद में सत्य का अंश यह है कि बुद्धि से सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान मिलता है। परंतु ऐसे ज्ञान में वास्तविकता और नवीनता की कमी होती है। दूसरी ओर अनुभववाद में सत्य का अंश यह है कि अनुभव से वास्तविक और नवीन ज्ञान मिलता है। परन्तु ऐसे अनुभवजन्य ज्ञान में सार्वभौमिकता और अनिवार्यता होने के साथ-साथ नवीनता भी है।

कांट के अनुसार गणित और भौतिक विज्ञान में संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय सम्भव है।

कांट गणित के एक उदाहरण से इसे स्पष्ट करते हैं। जैसे 'पाँच और सात का योग बारह होता है। (5+7=12) इसमें विधेय '12' उद्देश्य '7+5' में निहित नहीं है। '7+5' और '=' का विश्लेषण करने पर या टुकड़े-टुकड़े करने पर '12' नहीं मिलता है। यहाँ '12' '7+5' का योग मात्र नहीं है बल्कि उससे उत्पन्नित फल है। यही संख्या

को लेने पर यह तथ्य अधिक स्पष्ट हो जाता है। यहाँ चिन्ह '=' उद्देश्य और विधेय के मध्य तादात्म्यता को इंगित नहीं करता। इस प्रकार कांट के अनुसार गणित का निर्णय संश्लेषणात्मक है। कांट के अनुसार चूँकि यह निर्णय सर्वव्यापक एवं अनिवार्य सत्य समझा जाता है इसलिए इसे प्रागनुभविक भी कहा जायगा।

कांट गणितिक विज्ञान में संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय की सम्भाव्यता स्वीकार करते हैं। इसे कांट ने उदाहरण से स्पष्ट किया है।

'प्रत्येक घटना का कारण होता है। इसकी सत्यता सार्वभौम एवं अनिवार्य है। इसलिए इसे प्रागनुभविक कहा जायगा। पुनः घटनाओं में 'कारण' निहित नहीं होता है। परन्तु वाक्य में 'विधेय' उद्देश्य से बाहर है। यह अनुभव पर आधारित नहीं है बल्कि सभी प्रकार के अनुभव स्वयं इस पर आधारित है।

आलोचना

(1) समसामयिक विचारधारा के अनुसार विश्लेषणात्मक और प्रागनुभविक एक प्रकार के प्रकथन हैं। साथ ही संश्लेषणात्मक एवं अनुभविक भी एक ही प्रकार के प्रकथन हैं। अतः संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक का आशय संश्लेषणात्मक विश्लेषणात्मक प्रकथनों से हो जाता है। परंतु किसी एक ही कथन को संश्लेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक कहना आत्मविरोधी है जिसे तर्कतः स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(2) गणित में संश्लेषणात्मक ज्ञान नहीं होता। कांट ने गणित में इसकी सम्भावना को दिखाते समय मनोवैज्ञानिक व्याख्या का सहारा लिया है, तार्किक नहीं।

Scanned with CamScanner